वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जुलाई – 2023

- जिन पर हमें नाज़ है।
- भक्षक से रक्षक
- अपनी शक्तियों और अन्य लाभों.....
- नीच घृणा आत्मा के लिए घातक है
- हम मनुष्यात्मा भ्रम में जीते हैं।
- मेरा दुःख, मेरी सोच
- नीच अथवा बुरे चरित्र की बीस.....
- देव समाज एक पत्रकार की दृष्टि में
- उच्च व श्रेष्ठ चरित्र के सोलह.....

इस अंक में

1. धर्म जीवन के जुलाई के इस अंक में हम देव समाज के मैंम्बरों के कुछ प्रेरणादायक दृष्टांत दे रहे हैं कि जिन पर हमें नाज़ है। यह सब घटनाएं हजारों घटनाओं के गुलदस्ते में से कुछ हैं जो हमें उच्च जीवन की राह पर चलने के लिए उत्साहित करती हैं। कैसे देव समाज के प्रभावों ने एक भक्षक को रक्षक बना दिया - एक सच्ची करामात को पढ़िए।

2. अपनी शक्तियों को सफल करने का एक ही उपाय है वो है सत्य धर्म। नीच जीवन को बदलना किसी इन्सानी तहरीक का काम नहीं। जो महान् काम एक मात्र सत्य देव भगवान् देवात्मा ही कर रहे हैं। इसी प्रकार के विचारों से भरपूर है अगला "अपनी शक्तियों को सफल करने का उपाय "जिसके लेखक हैं देव समाज के महान दार्शनिक श्रीमान पी. वी. कनल जी।

3. नीच घृणा महा घातक है। जो दूसरों से घृणा करके हमें खुद को जलाती है, इससे बचने की आवश्यकता क्यों है?

4. नीच चरित्र की बुराईयां और उच्च जीवन के गुणों को पढ़कर हम अपने भीतर के गुणों वा अवगुणों का आकलन कर सकते हैं। "नीच चरित्र की बीस बुराईयां" नीच वा बुरे चरित्र की यह सब बुराईयाँ देव समाज में और देव समाज के द्वारा अन्य जनों के जीवन से नष्ट की जाती हैं। और "उच्च जीवन के सदगुण" जिन्हें देव समाज अपने और अपने भिन्न और जनों में उनकी योग्यता के अनुसार विकसित करती है।

5. "देव समाज एक पत्रकार की दृष्टि में" एक पुराना पत्र है, जो कि एक गैर देव समाजी पर देव समाज के प्रभाव को बताता है।

---

1. मनुष्य के लिए और सब प्रकार के ज्ञान वा सब प्रकार की विद्याओं की तुलना में जिस विषय में सबसे बढ़कर सत्य ज्ञान लाभ करने की आवश्यकता है, वह उसका अपना अस्तित्त्व (आत्मा) है। क्योंकि अपने अस्तित्त्व विषयक सत्य ज्ञान से बढ़कर उसके लिए कोई मूल्यवान ज्ञान नहीं, और नहीं हो सकता।

2. मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने अस्तित्त्व - विशेषकर अपने आत्मा के विषय में सत्य बोध वा सत्य ज्ञान लाभ करने का आकांक्षी होने से बढ़कर कोई बड़ा अधिकार नहीं; क्योंकि इससे नीचे पशु जगत के किसी जीव को भी अपने अस्तित्त्व के विषय में इस प्रकार के ज्ञान लाभ करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं।

देव वाणी

भगवान देवात्मा फरमाते हैं :-

जिन मनुष्यों में 'अहं' अनुराग इतना प्रबल होता है कि वह "अपनी" सच्ची वा झूठी <u>प्रशंसा</u> के भिन्न किसी और के किसी सच्चे <u>सद्गुण</u> की प्रशंसा को आराम से नहीं सुन सकते और उसे सुनकर अपने हृदय में आघात लाभ करते और कष्ट अनुभव करते हैं, अथवा 'अपनी' अपेक्षा किसी विषय में किसी को <u>बढ़िया वा अधिक सुखी देखकर</u> वा जानकर प्रसन्न होने के स्थान में दुःखी होते हैं, ऐसे जनों के इस प्रकार के दुख ईर्षाजात दुःख कहलाते हैं। इस पृथ्वी पर लाखों स्त्री पुरूष इस प्रकार के ईर्षा जात दुःखों से जलते रहते हैं। और जिन में इस महा नीच ईर्षा भाव के साथ प्रतिशोध भाव भी प्रबल रूप में वर्तमान हो, वह किसी ऐसे जन की, जिससे वह ईर्षा रखते हों, एक वा दूसरी विधि से हानि करने का भी यत्न करते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 7
जुलाई – 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

जिन पर हमें नाज़ है।

देव समाज के संस्थापक ने अद्वितीय समाज का गठन किया है कि जिसका प्रत्येक मैम्बर नशों, मांसाहार, चोरी, जुआ, रिश्वत, अमानत में ख़्यानत, व्यभिचार, जीव हत्या जैसे पापों से मुक्त है और अंध विश्वासों के जाल से निकलकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखता है। देव समाज के मैंबरों को सेवक कहा जाता है, सेवक का अर्थ है सेवा करने वाला अर्थात् उसके प्रत्येक सदस्य से यह उम्मीद की जाती है कि उसका जीवन सेवाकारी होगा। देव समाजी घरों में अलग Culture देखा जाता है कि उनके घरों में पौधे होते हैं कि जिन की सेवा की जाती है। उनके घरों में पक्षियों के लिए दाना और पानी रखा जाता है। माता पिता, भाई बहनों, पति पत्नी आपसी संबंधों में सेवाकारी होते हैं। देव समाज के सेवक परोपकार विषयक कामों में अपना समय और धन भी अपनी योग्यता अनुसार खर्च करते हैं। किसी भी देश, कौम वा समाज के सदस्यों के नेक जीवनों की प्रेरणादायक घटनाएं उस देश, कौम व समाज के लिए धरोहर होती हैं। यह घटनाएं जहां उस समाज की संस्कृति को पेश करती हैं वही जनसाधारण वा उस समाज में आने वाली पीढ़ी को भी उसी राह पर चलने के लिए प्रबल प्रेरणा प्रदान करती हैं। हम हमारे पाठकों के लिए देव समाज के लोगों की ऐसे ही प्रेरणादायक घटनाएं और उनके जीवन में आए शानदार परिवर्तन को यहाँ दे रहे हैं :-

1) एक समय था जब कि एक जन देव समाज संस्थापक के प्रभावों से इतना परिवर्तित हो गया, कि दुनिया अश अश कर उठी। वह डॉक्टर था, हृदय का बहुत कठोर था और पैसे का बहुत लालची था। पैसे की महिमा जितनी उसके सामने थी, उतनी मनुष्य की नहीं थी। उन्होंने अपने जीवन की एक घटना सुनाई थी कि एक बार उनके पास तीन-चार मील से दो-तीन आदमी भागते हुए आए कि हमारे एक आदमी की टांग टूट गई है, आप कृपा करके जल्दी चलें। डॉक्टर ने तत्काल ही कह दिया कि पहले फीस अदा करो, फिर मैं चलूँगा। गाँव वालों ने कहा, हम फीस साथ लाना भूल गए हैं, आप हमारे साथ चलें, पहले फीस ले लें और फिर हमारे आदमी का इलाज करें। डॉक्टर साहिब जो पैसे की महिमा को जानते थे और दुखियों के दुःख-दर्द का बोध नहीं रखते थे, वह भला कब हिल सकते थे, इसलिए नहीं हिले फीस पहले ली

और वह फिर बीमार की मदद के लिए गए।

देव समाज में आने के बाद वह अपने जीवन की पहली ऐसी घटनाओं को याद करके इतनी गहराई से दु:खी होते थे, कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। उन्होंने एक साल के लिए यह प्रतिज्ञा की कि मैं गरीब और साहूकार किसी से फीस नहीं लूँगा, उनकी परीक्षा का भी समय आ गया। आधी रात का समय था, सारे दिन की थकावट के बाद डॉक्टर साहब आराम से सोए थे। इतने में अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया, डॉक्टर जी ने पूछा कि कौन है? नीचे से किसी ने जवाब दिया कि डॉक्टर साहिब एक जन सख़्त बीमार है, वह है तो देव समाज का दुश्मन, परन्तु वह बार-बार यही कहता है, कि मुझे देव समाजी डॉक्टर ही बचा सकता है। डॉक्टर जी ने अपने आपको सम्बोधित करके कहा, कि ऐ मन। यह अवसर सेवा करने का है, न कि शत्रुता का प्रकाश करने का, तुम चलो और इन्सान की ज़िन्दगी को बचा लो। डॉक्टर जी वहाँ गए और सारी रात मौत के साथ युद्ध करते रहे और उस देव समाज के शत्रु को बचा लिया। डॉक्टर का दिल बहुत खुशी और हर्ष से भर गया और अपने देवात्मा गुरू को बार-बार धन्यवाद देता रहा कि जिनकी कृपा से वह बैरी की भी सेवा करने के योग्य हो गए।

2) जहां देव समाज ने श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे प्रिंसिपल पैदा किए, जो राजाओं महाराजाओं के रिश्तेदार होकर भी रात को बीमार बच्चों की उल्टीयां साफ करते थे, उन्हें ठंड से बचाने के लिए उन पर रजाइयां देते थे, कभी उनके साथ खेलते थे, उन्हें नीति शिक्षा देते थे, उन्हें पढ़ाते थे और जब बच्चे दसवीं करके स्कूल छोड़कर जाते तो वह प्रिंसिपल होकर बच्चों को प्रणाम करते, धन्यवाद देते कि आपने हमें सेवा का मौका दिया, वहीं देव समाज ने धर्मवीर जी, प्रेम बलजी जैसे प्रिंसिपल पैदा किए जो सारी आयु लड़कियों के कॉलेज में काम करते रहे और पाक पवित्र रहे। देव समाज ने ऐसे प्रिंसिपल पैदा किए हैं कि जिन्होंने एक एक कमरे से देव समाज के स्कूल कालिज शुरू किए और उन्हें भव्यता के शिखरों तक पहुँचाया। जब उन्होंने स्कूल कॉलेजों के प्रबंध को संभाला था तब वह उस संस्था के प्रिंसिपल भी होते थे, पानी भरने वाले भी, घंटी बजाने वाले भी और पढ़ाने वाले अध्यापक भी। देव समाज ने ऐसे श्रीमान पी. वी. कनल जी जैसे प्रिंसिपल पैदा किए जिनका सारा जीवन ही परोपकार की मुँह बोलती तस्वीर है। दिसम्बर 1934 की बात है पी. वी. कनल साहब अपने दफ्तर में बैठे थे आकाश बादलों से घिरा हुआ था और ठंडी हवांए चल रही थी। उनके कॉलेज का एक विद्यार्थी आधी बाजू की सफेद कमीज पहने और किताबें हाथ में उठाए ठंड से ठिठुरता आ रहा था। प्रिंसिपल साहब ने अपने दफ्तर से उसे देखा और अपने एक अध्यापक को यह जानने के लिए भेजा के इस लड़के ने पूरे गर्म कपड़े क्यों नहीं पहने? अध्यापक ने आकर बताया कि वह एक गरीब परिवार का लड़का है, इसलिए वह गर्म कपड़े नहीं खरीद सकता, तो इस पर प्रिंसिपल साहब ने अपने पास से पैसे देकर यह कहा कि उस लड़के को गर्म कोर्ट दिलवा दो और इस प्रकार उसे गर्म कपड़े बनवा कर दिए गए। इसी प्रकार उनका एक और विद्यार्थी था जो कि कई दिनों से कॉलेज लेट आ रहा था, प्रिंसिपल साहब ने उससे लेट आने का कारण पूछा परंतु उसने

कोई उत्तर न दिया और रोता रहा। काफी देर पूछने पर उसने बताया कि मेरे पिता जी का देहांत हो गया है और मेरी माता जी की आँखों की रोशनी जा रही है। उसने यह भी बताया कि मेरे दो भाई और दो बहने हैं उनका सुबह का खाना बनाकर ही मैं कॉलेज आता हूँ, इसलिए मैं हर रोज़ देर से कॉलिज पहुंचता हूं। कनल जी ने उसकी माता के आँखों का ऑपरेशन मोगा से करवाया और कई दिन तक अपने घर से उस परिवार को खाना भेजते रहे। वह सिन्ध के पहले एम.ए. एल.एल.बी (M.A. L.L.B.) थे जिनकी उन दिनों बहुत शानदार वकालत थी। कीमती से कीमती कपड़े पहनते थे, परन्तु सब सुख आराम त्याग कर गुरू मिशन में जीवन भेंट कर दिया, बहुत थोड़ा वजीफा लेकर गुज़ारा किया। कबाड़ी से लेकर कोट पहना हुआ था। किसी ने कहा कि आपने यह गरीबी क्यों चुनी उन्होंने ऐसा कुछ जवाब दिया, I am poor with my own choice अर्थात यह गरीबी मेरी खुद की चुनी हुई है।

3) श्रीमान् सुच्चासिंह जी कोहारवाला के जीवन की एक विचित्र घटना है। वह देवसमाज के अच्छे उत्साही और होनहार सेवक थे। एक बार वह कहीं खेती के काम पर गए हुए थे। जब वह बाहर से घर में वापस आए और ज्योंही अपनी बैठक में गए, त्योंही वह क्या देखते हैं कि वहां एक चूल्हे पर हांडी चढ़ी हुई है और मसाला खूब घोटा जा रहा है। उन्होंने पूछा कि यह क्या हो रहा है, तो पुलिसवाले ने बताया कि थानेदार साहिब के लिए मुर्गा तैयार हो रहा है। श्री सुच्चा सिंह जी ने उससे बहुत चोट खाई और उन्होंने कहा – तुम्हें पता नहीं कि मैं देवसमाजी हूँ। उनको उत्तर मिला कि देवसमाजी हो तो फिर क्या है, यह मुर्गा थानेदार साहब के लिए तैयार हो रहा है। श्री सुच्चा सिंह जी ने ज़ोर से कहा, कि देव समाजी के घर में मुर्गा नहीं पकेगा, चाहे कोई थानेदार हो, चाहे बादशाह! इस पर पुलिसवालों ने उत्तर दिया कि हम लोग तो कई ब्राह्मणों के घर में भी बना लेते हैं, आप अगर कहेंगे, तो हम बाद में पोचा दे जाएँगे। तब श्री सुच्चा सिंह जी ने जोश से भरकर कहा कि अगर कोई कहे कि गाय का कत्ल करके तुम्हारे घर पकाएँगे और बाद में पोचा दें देंगे, तो कौन हिन्दू इसे पसन्द करेगा? मैं इसे वैसे ही बुरा ख्याल करता हूँ। इसलिए हांडी और कुंड्ड़ा सोटा बाहर फेंक दिया। सच्चे सेवक की तरह किसी की हिम्मत और हौसले का तभी अनुमान हो सकता है, जब किसी को ऐसी परीक्षा में से गुजरना पड़े। क्योंकि वह छोटे ज़मींदार थे और खुद काश्त करते थे और ऐसे जनों पर पुलिस का जो डर होता है, वह बहुत अधिक होता है, परन्तु "सच्चे गुरु का बालिका, मरे न मारा जाए"। इसलिए श्री सुच्चासिंह जी अपनी सेवकी की प्रतिज्ञाओं से विमुख नहीं हो सकते थे और अपनी प्यारी और हितकारी देवसमाज के गौरव को बट्टा नहीं लगा सकते थे और सत्गुरू के दरबार के लिए हर प्रकार के बलिदान देने के लिए हर समय तैयार रहते थे। श्री सुच्चा सिंह जी अपने इस एक दृष्टांत से देवसमाज के गौरव को बढ़ाने वाले प्रमाणित हुए।

4) एक सेवक को जब वह सुबह की सैर को जा रहे थे, रास्ते में एक खरबूजा पड़ा मिला। आसपास के देहात में जो लोग मंडी में खरबूजे बेचने आते हैं उनमें से किसी का गिर गया होगा। यह सोचकर वह सेवक उसको उठाकर सब्जी मंडी में गए जहां खरबूजों के ढेर लगे थे, पूछते

पूछते उन्होंने उस खरबूजे के मालिक को ढूंढ लिया। जब उन्होंने वह खरबूजा उसके मालिक को दिया तो इर्द-गिर्द जो जन खड़े थे, उनमें से एक बुढ़िया बोली "भाई तैनूं महाराज ने दिता सी तू खा लैंदा।" अर्थात भाई तुम्हें परमात्मा ने यह खरबूजा दिया था तुम खा लेते। उस बुढ़िया को क्या पता था कि कल्पित परमात्मा से ऊपर एक और सचमुच के महाराज अर्थात श्री देव गुरू भगवान हैं जो इस प्रकार प्राप्त खरबूजे को खाने नहीं देते बल्कि वह जिसका है जहां तक संभव हो उसी तक वापस करने की आज्ञा देते हैं। एक एक साधारण जन उस बुढ़िया की तरह कह सकता है कि मैंने खरबूजा चुराया थोड़ी है मुझे तो पड़ा हुआ मिला है इसलिए इसके खाने में क्या हर्ज़ है। हम लोगों को याद रखना चाहिए कि हम ऐसे देव समाज के संस्थापक के सेवक हैं जिन्होंने किसी के खेत से एक टाट तक नहीं तोड़ी थी। दुनिया के लोग हमारे जीवन की ओर देखते हैं कि देव समाजी अपने गुरू की शिक्षा पर कितना चलते हैं। हमारी ईमानदारी पर शक की गुंजाईश नहीं होनी चाहिए।

5) <u>बेदाग जीवन :</u> देव समाज के एक सेवक लिखते हैं "श्रद्धेय श्रीमान मोहनदेव जी (देव समाज के एक कर्मचारी) का जीवन इतना शुद्ध एवं पवित्र था कि उनका कटु से कटु दुश्मन भी उसमें कोई दोष नहीं निकाल सकता था। एक दिन उन्होंने मुझे बताया, "यही काफी नहीं है कि हम लोग निर्दोष बेदाग जीवन जीएँ, बल्कि होना यह चाहिए कि सीज़र की पत्नी के समान हमारा जीवन हर प्रकार के सन्देह के परे होना चाहिए।" और वे स्वयं वास्तव में हर प्रकार के सन्देह से ऊपर थे। जब सिन्ध में देवसमाज का काम फैला तो इनके सन्त रूपी जीवन ने लोगों को इतना प्रभावित किया कि लोग उन पर पूर्ण विश्वास करते थे। उनका जीवन पवित्रता की मूर्ति था। स्त्रियों के प्रति कभी आकर्षण अनुभव नहीं किया और न ही कभी ऐसा व्यक्त किया। लोगों को हमेशा ऐसा ही लगता था कि शारीरिक सौन्दर्य के प्रति उन्हें कोई आकर्षण है ही नहीं। उन्होंने नारी जगत् के लिए अनेक कल्याणकारी कार्य किए। उनकी सभाएँ कराते थे। पर सभाओं में उनकी आत्मा का कल्याण करने के बाद स्वयं को यों परे समेट लेते थे जैसे कि वे उन्हें जानते भी न हों। उनका महिलाओं से सम्पर्क केवल उनके उच्च जीवन को लेकर था। वे उनसे तभी तक बात करते थे जब तक कि उच्च जीवन का विषय चर्चित होता था, किन्तु उस विषय के समाप्त होते ही वे उनसे सम्पर्क तोड़ लेते थे। भगवान देवात्मा ने महिलाओं के विषय में जिस जिस शिष्टाचार के पालन का नियम बनाया था, वे उसे पूरा करते थे। महिलाओं के संबंध में श्रीमान जी वास्तव में सन्देह से परे थे। एक दफा वे कुछ अन्य कर्मचारियों के साथ भगवान देवात्मा के चरणों में बैठे थे, तब भगवान ने फ़रमाया, "श्रीमान् मोहनदेव जी ऐसे व्यक्ति हैं कि यदि अवसर पड़े तो अपनी पुत्री को मैं उनके सुपुर्द कर सकता हूँ। इस मामले में वे सर्वाधिक विश्वसनीय हैं।" धन सम्बन्धी ईमानदारी पर भी वह पूर्ण विश्वास के लायक थे।

आगे इनके विषय में वही माननीय सेवक लिखते हैं :- जब मेरा विवाह हुआ था, तो मैं श्रीमान् पण्डित हर नारायण अग्निहोत्री जी को छोड़ने सक्खर तक गया था। वे मेरा विवाह संस्कार सम्पन्न कराने के लिए लाहौर से आए थे।

अब बहुत कृपा करके वे लाहौर लौट रहे थे। श्रीमान मोहनदेव जी भी हमारे साथ थे। सक्खर स्टेशन पर मुझे अपनी धर्मपत्नी को उनके पास छोड़कर श्रीमान् पण्डित जी के साथ 'साध बेला' तक जाना पड़ा। विभाजन से पूर्व सिन्ध में यह हिन्दुओं का एक पवित्र तीर्थ स्थल था। लाहौर की ट्रेन आने में अभी कुछ घण्टे शेष थे। कोई तीन घण्टे के बाद हम शिकारपुर लौटे। घर पहुंचने पर मेरी धर्मपत्नी ने शिकायत की कि उन्होंने वह समय बहुत अकेलेपन में बिताया। 'भाई मोहनदेव जी मुझसे कुछ दूरी पर बैठ गए थे और सिवाय कभी कभी यह पूछ लेते कि मुझे कुछ चाहिए तो नहीं, वे मुझसे एक शब्द भी नहीं बोले।' निश्चित तौर से ही उस सारे समय में श्रीमान जी ने उन्हें एक क्षण के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा। वे बराबर अपने कार्य पर मुस्तैद रहे, पर उन्होंने किसी भी प्रकार की अनावश्यक बातचीत नहीं की। मेरी पत्नी तब एकदम युवा थीं एक दिन पहले ही तो हमारा विवाह हुआ था। भाई मोहन देव जी पर देव समाज के विरोधी तक भी इस पक्ष में कोई आरोप नही लगा सकते थे।"

देव समाज का इतिहास और वर्तमान ऐसी सच्ची और प्रेरणादायक घटनाओं से भरा पड़ा है, जिन पर कई किताबें लिखी जा सकती हैं, फिल्में फिल्मायी जा सकती हैं।

भक्षक से रक्षक

मनुष्य अपने नीच सुखों की तृप्ति के लिए कितने बुरे कर्म करता है, और ऐसे कर्म करके कोई दुःख अनुभव नहीं करता। कैसे स्वाद सुख के लिए पशुओं का वध किया जाता है हंसते खेलते, फुदकते पशुओं को गोली का शिकार बनाकर एक 2 जन अपनी बहादुरी समझता है और दूसरों के पास भी खुशी 2 इसको ब्यान करता है, ऐसे ही बहुत से गांव के मालिक, बड़े बड़े राजों महराजों के रिश्तेदार सरदार हरनाम सिंह जी थे।

जानवरों का शिकार करना, उन्हें खाना और उनकी दावतें देना उनका शौक था। शराब की भट्ठियां घर में चलती थी, राजे महाराजे भी इन दावतों में आते और मनोरंजन के साधन भी जुटाए जाते। बड़े घरों का ऐसा चलन बहुत गर्व की बात समझी जाती थी, और अब भी समझी जाती है। पशुओं के सम्बन्ध में उनका व्यवहार इतना कठोर था, कि कितने काले हिरणों का स्वयं शिकार किया और औरों से करवाया। जिन्दा कबूतरों को जाल में फंसाकर जिन्दा उन्हें तन्दूर में फैंक देते थे। ऐसे भक्षक को जानवरों का कैसे रक्षक बना दिया।

ऐसे दुनियादारी या पाप ग्रस्त हालात से किसी का निकलना एक क्रिश्मा है। वह कुछ धार्मिक प्रकृति रखते थे, साधु सन्तों के लिए श्रद्धा रखते थे। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जो इंजीनियरिंग करने के बाद परम पूजनीय भगवान के सम्पर्क में आए, उनके प्रभावों से उन्होंने अपने सारे भावी सुनहरे सपने छोड़कर, पापियों और मिथ्याचारियों को बचाने के लिए अपना

जीवन भेंट कर दिया और सच्चे साधु बन गए। सरदार हरनाम सिंह जी का कितना बड़ा सौभाग्य कि वह उनके सम्पर्क में आए और उनसे इतने प्रभावित हुए कि उनकी संगत के लिए उन्हें घर ले आए। इस महान प्रचारक ने उन तक गुरू महाराज के प्रभाव इस मात्रा में पहुँचाए कि उन्होंने, मांस, शराब और शिकार से तोबा कर दी। न केवल यह घिनौने पाप छोड़ दिए बल्कि पक्षियों और पशुओं के रक्षक और मित्र बन गए। उन्होंने अपने गाँव में कोई पशुवध करना वर्जित कर दिया। शिकार पर पाबंदी लगा दी।

एक बार एक अंग्रेज अफसर ने उनको पत्र लिखा कि फलां तारीख को हम शिकार खेलने आ रहे हैं, अपने ऊंट तैयार रखना। सरदार साहिब ने बड़ी नम्रता से उन्हें जवाब दिया कि अफसोस आपके शिकार खेलने के लिए मैं ऊंट नहीं दे सकता, और मैं न ही अपने ईलाके में, शिकार खेलने दे सकता हूँ। सरकार का हुक्म नहीं है इसलिए। उनके यह पूछने पर कि सरकार तो हमारी है उन्होंने कुछ ऐसे शब्द कहे कि मेरी बड़ी सरकार का हुक्म है, अर्थात गुरू महाराज का हुक्म नहीं हैं। गुरू महाराज किस कदर इन्सान को निर्भीक बना देते हैं। अंग्रेज़ों के राज्य में ऐसा करना आसान नहीं था। परन्तु यह देव प्रभावों का जादू था।

केवल यही नहीं कि उन्होंने शिकार, मांसाहार, शराब वा अन्य पाप छोड़े, पशुओं के लिए जगह 2 पर पानी का प्रबन्ध किया, उनकी सेवा करके अपने पिछले पापों का परिशोध करने लगे। उनके इस परिवर्तन ने उनके ईलाके में तहलका मचा दिया। वह दूसरों के पाप छुड़ाने लगे। उनके घर में सत्संग होने लगा, क्या आश्र्चजनक परिवर्तन!

इससे भी आगे बहुत घिनौना पाप उनके घर में होता था। जब घर में किसी बहू के लड़की पैदा होती,, तो उसी समय उसका गला घोंट कर मार दिया जाता था। यह कहा जाता "गुड़ खावीं, पूनी कत्तीं, आप न आंई वीर नू घत्तीं" बहू यदि अपने पीयर में बच्चे को जन्म देने जाती, उसको भी यही हिदायत होती थी कि यदि लड़की लेकर आई, तो इस घर में तुम्हारा कोई स्थान नहीं। केवल एक लड़की जिन्दा रखी थी, ताकि अंग्रेजों की हकूमत में वह गुनाहगार न लगें। उस परिवार में न केवल लड़कियों का मारा जाना बन्द हो गया, बल्कि उन्होंने लड़कियों के लिए अपने दो गाँवों में दो स्कूल खोले और न केवल उनके परिवार की लड़कियों ने वहां शिक्षा पाई, अन्य गांवों की लड़कियां भी पढ़ने लगी मेरे mother in law अर्थात माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी की माता जी ने चार बच्चों के साथ वहां पढ़ाई की। माता जी वा उनकी बड़ी बेटी एक ही कलास में दाखिल हुई। माता जी ने वहाँ से आठवीं की फिर और जगह से Teacher Training की और गर्वनमैंट प्राइमरी स्कूल की हैडमिस्ट्रेस बनकर पैंशन लेती रही। सरदार साहिब देव समाज संस्थापक क नाम एक पत्र लिखते हैं :-

हे भगवन! मेरे परिवार में इस समय जितनी लड़कियां हैं, वह आपको दुआएं दे रही हैं। जहाँ पहले मेरे परिवार में किसी लड़की के पैदा होने पर उसे खत्म कर दिया जाता था, अब बीसियों लड़कियां शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। मेरे दोनों गावों में शिक्षा वा प्रशिक्षण देने के लिए स्कूल खोले हुए हैं।

मेरी पोतियां आपके उपकारों के भजन गाती रहती हैं तथा प्रकाश करती रहती हैं कि हमें देवगुरू भगवान ने बचा लिया, अन्यथा हम कहां होती, किसी गड्ढ़े वा तालाब में पड़ी होती।

भगवन! न केवल आपके उपकारों को स्मरण करता हूँ बल्कि खानदान का बच्चा बच्चा आपको धन्यवाद दे रहा है। सरदार साहिब अपने घर की बेटियों को यूं कहते हैं :-

"दो धन्यवाद गुरू को बेटी - जिसका हम पर साया है"
जिनकी ज्योति शक्ति पाकर, पलटी घर की काया है।
तुम्हें पता है यह घर कैसा-खूनी था कन्याओं का,
पर अब इसी प्रभावों में तूने-बेटी का सुख पाया है।

यह सरदार साहिब जो अपने घर वा विशेषकर अपने बाग से बेहद बन्धे हुए थे। एक एक बाग का वृक्ष उन्हें बहुत प्यारा था, परन्तु आखिर समय में सब कुछ छोड़कर लाहौर देव आश्रम में चले गए। परलोक जाने से पहले ही सारे बन्धन तोड़ दिए। देव प्रभावों का कैसा अनोखा क्रिश्मा! एक भक्षक को सचमुच पशु-पक्षियों वा कन्याओं का रक्षक बना दिया। पाप भरी जिन्दगी से निकालकर एक पवित्र ज़िन्दगी जीने के योग्य बना दिए। सब अनुचित बन्धनों से आज़ाद कर दिया। धन्य हैं ऐसे सत्गुरू और उनका कारज। जितना भी उनको धन्यवाद दिया जाए, कम है।

-सुरजीत बराड़

अपनी शक्तियों और अन्य लाभों को सफल करने का एक ही उपाय

- पी. वी. कनल

मैं पिछले साल जब बम्बई में गया था, तब उस दौरे में मुझे सान्ता क्रूज जाना पड़ा। जब मैं स्टेशन से बाहर आया तब मैंने कुछ आदमियों का एक समूह देखा। आगे बढ़कर मुझे जो कुछ मालूम हुआ, वह भयानक दृश्य मुझे कभी नहीं भूलेगा। दो नवयुवक भूमि पर बेहोश पड़े थे। मालूम होता है उन्होंने कई बार कै की थी और उनकी टट्टी और पेशाब भी बीच में बह गया था। वह उसमें लतपत पड़े हुए थे। वह नव युवक शकल से बीस बाईस वर्ष के नज़र आते थे। देखने में भी सुन्दर थे। अच्छे मजबूत दिखाई देते थे। लेकिन शोक और महाशोक! वह शराब पीने के अभ्यासी बन चुक थे। जो आदमी उन के इर्दगिर्द खड़े हुए थे, वह या तो हंसी मखौल की हालात में थे या कोई-कोई उनमें से उन पर तरस खाते थे। मुझ पर तो अजीब सी हालात तारी हो गई। मैं तो वहां खड़े-खड़े सोचने लगा, कि यह अभागे नौजवान केवल दो नहीं किन्तु ऐसे अभागे जन भारतवर्ष में लाखों की संख्या में वर्तमान हैं और सारी दुनिया में तो करोड़ों की संख्या में मौजूद हैं। इन अभागों को धन मिला जिससे वह अपनी रक्षा कर सकते थे, परन्तु इसी धन से ही वह बेहोशी और जिल्लत खरीद कर लाते हैं। इन अभागे जनों को नौजवानी मिली, अच्छा बलवान शरीर मिला, अच्छी कमाने की ताकत मिली, परन्तु इन्होंने अपनी अच्छी शक्तियों और अन्य लाभों को अपनी तबाही में ही लगा दिया और लगा रहे हैं। यह अभागे जन बहुत सारी सूरतों में परिवार रखते हैं, जिस परिवार को लेकर वह सुख और शान्ति का जीवन बसर कर

सकते हैं, परन्तु इसी परिवार को ही नरक का धाम बना देते हैं और इसलिए जीवन रक्षक सामानों से रुठ कर जीवन विनाशक सामानों के हवाले हो जाते है। यहां पर ऐसे अभागे जनों को बचाने के लिए सत्य धर्म की नितान्त आवश्यकता है।

किस प्रकार से ऐसे अभागे जन सत्य धर्म की ज्योति से खाली होकर अपना और अपने पारिवारिक जनों का नाश करते हैं, वह नीचे दिए हुए दो दृष्टान्तों से साफ प्रगट होता है। एक गांव में एक प्राइमरी स्कूल का हैडमास्टर था और उनकी (पुराने जमाने में) तीस रुपये माहवार तनख्वाह थी। वह अच्छा काबिल हैडमास्टर गिना जाता था। वह अभागा जन कुसंगत से शराबी बन गया। स्कूल के समय में वह शराब बिल्कुल नहीं पीता था और अच्छा पढ़ाता था। परन्तु जब वह स्कूल से छुट्टी पाकर घर में पहुँच जाता था, तो वह बिन पानी मछली की न्याई शराब के लिए तड़पना शुरू कर देता था और देसी शराब की एक बोतल लेकर वह सारी पी जाता था, अर्थात् अपनी सारी तनख़्वाह शराब में खर्च कर देता था और उसकी नेक और पवित्र पत्नी औरों के लिए आटा पीसकर और इस प्रकार पैसे कमा कर अपने अभागे पति और बच्चों की पालना करती थी। जब वह होश में आता था, तब बहुत रोता था और अपनी स्त्री के कदमों पर पड़ जाता था कि हाय! मैं तुम्हें सताता रहता हूं, परन्तु रोने धोने से भी उस की कोई पेश नहीं जाती थी। ऐसे उजड़े हुए जनों और उजड़ते हुए परिवारों के बसाने के लिए सत्य धर्म की नितान्त आवश्यकता है।

मैंने एक जन को देखा जो अकाउंटैन्ट के पद पर नियुक्त था और माहवार उसकी अच्छी तनख्वाह थी। वह अच्छा गाता था। अपनी धर्म पत्नी के साथ बहुत प्रेम से रहता था। उसका कोई बाल बच्चा न था। वह बेचारा बुरे असरों में पड़कर शराबी बन गया। उसकी धर्म पत्नी ने यह तो जान लिया कि हम पर आफत आई है, परन्तु उसकी पेश नहीं जाती थी। जो दुष्ट जन उसका गाना सुनने के प्रेमक थे, वह भी इस अभागे जन को खुश करने के लिए शराब पिला देते थे। इसलिए उसको शराब मुफ्त में भी मिलनी शुरू हो गई। फिर क्या था, वह बेतहाशा इस मूजी का शिकार हो गया। उसकी धर्म पत्नी जिस को वह बहुत प्यार करता था, बहुत रोती थी, परन्तु शराब की आदत ने उसको कठोर भी बना दिया था। आखिरकार एक दिन बहुत शराब पी बैठा और नतीजा यह हुआ, कि वह पागल हो गया। उसके कई मित्रों ने जिन में से कई डॉक्टर भी थे, बहुत बड़ी कोशिश करके उसको होश में लाए और वह फिर नौकरी करने लग गया और उसने बहुत तौबा भी की और यह कसम भी खाई कि वह फिर कभी शराब नहीं पीएगा। परन्तु सत्य धर्म से खाली जनों के ऐसे वायदे कभी पूरे नहीं हो सकते। प्रत्येक बुरी आदत मनुष्य के इरादे की ताकत को नष्ट कर देती है। वही हाल उस अभागे अकाउंटेन्ट का हुआ। साल या दो साल के बाद उसने फिर शराब पी और उसकी होश का दीवा सदा के लिए बुझ गया। वर्षों तक तो मैंने उसे देखा कि उसकी निहायत वफादार पत्नी उसको दोनों वक्त पैदल सैर के लिए ले जाती थी, वह होश में तो नहीं था, परन्तु किसी की हानि भी नही करता था। ऐसे लाखों अभागे जनों की ऐसी कृपा-पात्र अवस्था से निकालने के लिए सत्य धर्म की नितान्त आवश्यकता है।

इसी प्रकार और नाना नीच भावों का

हाल है। एक जन काम वासना का इस कदर दास हो गया, कि वह अपनी पत्नी के होते हुए भी एक या दूसरी और स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध रखने के लिए अपने आप को मजबूर पाता था। बाप का वह इकलौता बेटा था, उसका बाप बूढ़ा था। उस के यहां भी एक ही लड़का था और घर में और कोई बच्चा न था। इसलिए वह क्या अपनी पत्नी और क्या अपने बच्चे का एक ही सहारा था। वह अपने पिता के सम्बन्ध में खुद भी स्नेह का भाव रखता था, अपनी पत्नी और बच्चे के लिए भी स्नेह भाव रखता था। फिर भी अपनी नीच वासना के वश होकर वह कई - कई रातें घर से बाहर रहता था और इसलिए अपने पिता और अपनी पत्नी के लिए बहुत बड़े दुख का कारण बनता था। कुछ दिन की गैरहाज़री के बाद जब घर में आता था और अपने पिता और पत्नी के दुखिया चेहरों को देखता था, तो फूट - फूट कर रोता था और फिर कई - कई दिन अपने घर से बाहर नहीं जाता था, परन्तु यह उसका सिलसिला अधिक समय तक नहीं चलता था। काम वासना का भूत उसको अपनी पत्नी और पिता के सम्बन्ध में बेवफा बनाने के लिए मजबूर कर देता था। एक बार महोत्सव के अवसर पर सभा परिचालक ने इस कामी पुरुष की अपने बूढ़े पिता और गरीब पत्नी के सम्बन्ध में बेवफाई का हाल बताया और इस बूढ़े पिता और गरीब पत्नी के दुखों का वर्णन किया। उस समय यह कामी पुरुष सभा में वर्तमान था। उसके दिल पर इस कथा का इस कदर गहरा असर हुआ, कि वह खड़ा होकर कहने लगा, कि मैं हूँ वह शैतान, जिसने अपने पिता और अपनी पत्नी को सताया है। उसके इस प्रकाश से सभा में सन्नाटा छा गया परन्तु क्या इस प्रकाश के बाद उसके जीवन ने कोई पलटा खाया? कुछ समय के लिए अवश्य उसको धक्का लगा, परन्तु उच्च संगत से कटकर वह फिर नीच गति के गार में जा गिरा। इस प्रकार के कामी पुरुषों से संसार भरा हुआ है। पत्नियों के सम्बन्ध में बेवफाई का जीवन तो एक साधारण बात हो गई है। ऐसे लाखों और करोड़ों बेवफा जनों को पवित्र और वफादार बनाना एक मात्र सत्य धर्म का काम है। नीच जीवन को बदलना किसी इन्सानी तहरीक का काम नहीं। इसलिए मनुष्य जीवन को सुन्दर और सुफल बनाना सत्य धर्म का ही काम है, जो महान् काम एक मात्र सत्य देव भगवान् देवात्मा ही कर रहे हैं।

पृष्ठ 20 का बाकि

10 - कृतज्ञता का भाव।
(जिसका प्रमाण अपने उपकारियों के सम्बन्ध में एक वा दूसरे प्रकार की सेवा करने के द्वारा मिल सकता है।)

11 - दयानतदारी का भाव।
(जिसका प्रमाण और बातों को छोड़कर कम - से - कम रुपए वा जायदाद के प्राप्त करने में 'बेईमान' न होने के द्वारा मिलता है।)

12 - समय विषयक बाध्यता का भाव।
(जिसका प्रमाण और बातों के भिन्न कम - से - कम प्रत्येक ऐसी सभा वा प्रत्येक ऐसे स्थान में नियत समय से कुछ पहले पहुंच जाने के द्वारा मिलता है कि जहां पर किसी का पहुंचना आवश्यक हो।)

13. आत्म सम्मान वा इज्ज़त का भाव
14. आत्म विश्वास वा आत्मनिर्भर का भाव
15. अपनी सहायता आप करने का भाव
16. साहस का भाव

नीच घृणा आत्मा के लिए घातक है

"नीच घृणा" का शब्द दुनिया में सुनने को नहीं मिलता, परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य में नीच घृणा और उच्च घृणा के विषय में शिक्षा दी है। उच्च घृणा किसी बुराई के प्रति होती है, जैसे राजा राम मोहन राय को सती प्रथा के प्रति घृणा थी और उससे परिचलित होकर उन्होंने सती प्रथा के विरूद्ध कानून बनाने के लिए संघर्ष किया और उसमें सफल हुए। जिस 2 बुराई के प्रति उच्च घृणा पैदा होती है, जितनी अधिक होती है, वह मनुष्य स्वयं तो उस बुराई से बचता ही है, दूसरों को बचाने का भी संग्राम करता है। मनुष्य की उच्च घृणा कुछ 2 बुराईयों तक ही सीमित होती है। परन्तु पूजनीय भगवान देवात्मा के भीतर ऐसी अद्वितीय शक्तियाँ विकसित हो गई कि उनमें प्रत्येक बुराई वा मिथ्या से पूर्ण घृणा वर्तमान थी, इसीलिए उन्होंने मनुष्यमात्र को उनकी योग्यता के अनुसार प्रत्येक बुराई से निकालने के लिए जीवन ब्रत ग्रहण किया।

देव समाज के सेवकों में मोटे 2 पापों से तो घृणा पैदा हो गई और वह उनसे बचे हुए हैं, वह करोड़ों लोगों से बेहतर हैं, परन्तु पूजनीय भगवान देवात्मा ने और बुराईयां जो इन्सान में है, उनके विषय में जहां शिक्षा दी है, उनसे बचने के साधन भी बताए हैं। मनुष्य में शरीर सम्बन्धी सुख अनुराग है, स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, अहं, नीच घृणा, द्वेष आदि महा कोढ़ हैं जिनके कारण घर 2 में नर्क है।

यहां हम एक विषय पर विचार करेंगे जो हम सब मनुष्यों के लिए महा घातक है, वह है नीच घृणा। नीच घृणा के कई स्त्रोत हैं जैसें -

(1) जहां हमारे स्वार्थ की पूर्ति न हो, तो उस जन के प्रति नीच घृणा पैदा होती है।

(2) अपनी कोई इच्छा वा कामना, चाहे वह उचित हो वा अनुचित पूरी न होने पर नीच घृणा पैदा होती है, वह उस जन को घटिया समझने लगता है। यह दूसरे की मजबूरी समझने में मनुष्य को असमर्थ्य कर देती हैं। इन्सान अन्दर ही अन्दर कुढ़ता रहता है, और दूसरों के पास भी नीच घृणा से भरकर ज़हर उगलता रहता है। साधारणत: दूसरे भी नीच घृणा भड़काने में सहायक होते हें। इससे न केवल अपने शरीर परन्तु आत्मा की हानि करता है, बल्कि उसकी नीच घृणा की लहरें फैलकर, उसकी इच्छा पूरी न करने पर भी पड़ती है, कई बार बहुत मधुर रिश्ते कटुता में बदल जाते हैं। सुख अनुराग पूरा न होने से नीच घृणा का अटूट सम्बन्ध है। कोई जन कितना भी उपकारी हो अपनी इच्छा पूरी न होने पर, उसका भी मनुष्य दुश्मन बन जाता है।

एक 2 बेटा अपने माता पिता से उसकी इच्छा पूरी न होने पर नीच घृणा से भरकर उनका कत्ल तक कर देता है। इस प्रकार की घटनाएं प्रतिदिन होती हैं। परिवार में साधारणत: ऐसा देखा जाता है कि लड़की शादी करके आती है, उसके सास ससुर उसकी छोटी 2 गल्तियां उसके पति को बताकर उसकी नीच घृणा को भड़का देते हैं और उसका व्यवहार अपनी पत्नी से कटु हो जाता है। कहीं पत्नी अपने सास ससुर का हस्ताक्षेप बताकर पति को भड़काती है, उससे बेटे की नीच घृणा अपने माता पिता के लिए भड़क जाती है और उसका सम्बन्ध, अपने

माता पिता से बिगड़ जाता है। स्त्रियां आमतौर पर अपने पति वा ससुराल वालों की निन्दा आस - पड़ोस में करती रहती हैं, वह उसकी नीच घृणा को और बढ़ा देते हैं। निन्दा नीच घृणा का ही प्रकाश है। आजकल तो मोबाईल इसके अच्छे माध्यम बन गए हैं। एक एक जन घण्टा घण्टा दूसरों की निन्दा करने, उसकी खिल्ली उड़ाने, कई बार गन्दे नामों से पुकारते देखे गए हैं, यह नीच घृणा का ही प्रकाश है। नीच घृणा दूसरों की हानि से पहले खुद मनुष्य को जला देती है। निन्दा, चुगली नीच घृणा के ही बाल बच्चे हैं।

सब से कठिन बात यह है कि नीच घृणा का प्रकाश करके मनुष्य यह साबित करने की कोशिश करता है कि मैं महान हूँ, दूसरा नीच, मैं तो उसकी सच्ची ग़ल्ती बता रहा हूं। ग़ल्ती बताने का साहस दूसरे के मुंह पर बताने में है, न कि पीठ पीछे छुरा घोंपने में। नीच घृणा अहं की उत्पत्ति है। जितना मनुष्य अहंकारी है उतना ही वह दूसरों के प्रति नीच घृणाकारी वा निन्दक है। नीच घृणा दूसरों के मान सम्मान का अपहरण करवाती है, यदि और अधिक गहरी हो जाए तो घृणाकारी जिसके प्रति घृणा है, उसकी हानि स्वयं करके वा दूसरों द्वारा होने पर खुशी अनुभव करता है।

ईर्षा से भी नीच घृणा उत्पन्न होती है। किसी के पास धन ज्यादा है, बच्चे योग्य हैं, सेवकारी हैं, समाज में उनका मान सम्मान है, यह देखकर बहुत से मनुष्य ईर्षा से भरकर नीच घृणाकारी बन जाते हैं। नीच घृणा ऐसी आग है, जो मनुष्य के शरीर और आत्मा को जलाकर राख़ कर देती है। प्रत्येक नीच सुख अनुराग से घृणा की उत्पत्ति होती है परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है -

"तुम किसी प्रशंसा सुख अनुरागी जन के सन्मुख कोई ऐसी सत्य बात भी कहो, कि जो उसकी प्रशंसा के विरुद्ध हों, तो वह अपने हृदय में कष्ट लाभ करेगा, और इस कष्ट वा दुख के मिलने से उसके भीतर तुम्हारे प्रति घृणा भाव की उत्पत्ति हो जाएगी, और वह तुमसे फटकर दूर हो जाएगा। और यदि तुम्हारे प्रति उसमें वह घृणा भाव बहुत प्रबल रूप से उत्पन्न हो गया हो और उससे पहले यदि वह जन तुम्हारा मित्र होकर तुम्हारी कोई सहाय वा मदद करता था, तो उससे भी वह अपना हाथ हटा लेगा। और यदि वह घृणा भाव उसमें और भी अधिक प्रबल रूप में उत्पन्न हो गया हो, तो वह तुम्हें मित्र के स्थान में शत्रु के रूप में देखेगा और तुम्हारा द्वेषी वा शत्रु बनकर और विविध प्रकार से तुम्हारा आप अहित करके वा किसी और से कराके इस नीच भाव की तृप्ति करेगा।"

प्रश्न : बड़ाई सुख अनुराग के अनुरागियों वा घमंडी जनों में अपने सुख के विरुद्ध किसी से भी सत्य बात सुनकर उसके प्रति नीच घृणा की उत्पत्ति होती है?

भगवान देवात्मा फरमाते है :-

"निस्संदेह। नेचर के आत्मिक जगत के अटल नियम के अनुसार उनमें नीच घृणा का अल्पाधिक गहराई में उत्पन्न होना अनिवार्य है। और इस नीच घृणा के उत्पन्न होने पर उनके हृदय का उससे फट जाना वा दूर हो जाना और उससे परे परे रहना वा उसका मुंह न देखना वा उससे कोई बातचीत न करना वा उसके सम्बन्ध में दुष्चिन्ताएं करना वा कई प्रकार के मिथ्या कलंक लगाना और फैलाना वा उसकी कोई

उचित सहाय न करना - चाहे वह उसका कैसा भी उपकारी क्यों न हो - और कई दिशाओं में इस घृणा भाव के बहुत बढ़ जाने पर उसकी कोई बड़ी हानि करना वा किसी और से कराना भी अनिवार्य है।"

प्र० परन्तु घमंडी लोग औरों की झूठी अप्रशंसा करके तो सुखी होते हैं? इसके उत्तर में पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं :-

"जी हां, बहुत! इसीलिए इस पृथ्वी के करोड़ों लोग औरों के सम्बन्ध में झूठी बकवास करके बहुत खुश होते हैं और इसीलिए इस प्रकार की झूठी बकवास वा निन्दा प्रत्येक देश के लोगों में बहुत फैली हुई है।"

प्रत्येक सुख अनुरागी मनुष्य के लिए कम वा अधिक घृणाकारी होना लाज़मी है। देवात्मा के देव प्रभावों की संगत से ही हमारी योग्यता अनुसार कुछ नज़र आ सकता है कि कितनी नीच घृणा जितनी घातक है, काश! मैं इस सत्य को समझकर इससे बचने का संग्राम करूं और जिसके लिए सम्भव हो इससे बच सकें।

-सुरजीत बराड़

हम मनुष्यात्मा भ्रम में जीते हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया कि हम सब मनुष्य पागल हैं, कोई कम पागल है, कोई अधिक पागल है। पागलपन अपने प्रति वा दूसरों के प्रति भ्रम पैदा करता है। एक पागल अपने को बहुत बड़ा और दूसरों को छोटा वा पागल समझता है। यह भ्रम उसे वास्तिवकता को देखने नहीं देता।

इसी प्रकार हम मनुष्यात्मा जो अपने आपको पागल नहीं समझते, हमारा हाल है। हम अपने आपको बड़ा, बहुत सेवाकारी, बहुत गुणधारी समझते हैं। केवल समझते ही नहीं हम दूसरों को छोटा दिखाने, घटिया दिखाने का सिर तोड़ यत्न करते हैं। हम अपने जीवन की लकीर को बड़ा करने के स्थान में दूसरों को घटिया दिखाकर निन्दा, चुगली, दूसरों का अपमान आप करके और दूसरों में फैलाकर उनकी लक़ीर छोटी करने में लगे हुए हैं। दूसरों को छोटा करने से कोई बड़ा नहीं होता। अपनी लकीर बड़ी करने का यत्न करना चाहिए।

हम भ्रम में जीते हैं, जब किसी लेखक का अपमान करते हैं, उनसे अपने आपको बड़ा समझते हैं, जबकि आप एक किताब तो क्या एक लेख भी नहीं लिख सकते। हम भ्रम में जीते हैं कि हमारे भीतर श्रद्धा है। परम पूजनीय भगवान ने तो फरमाया है कि जो मेरे समस्त जीवन अर्पण करके और त्याग से मेरे कारज में काम करने वालों के प्रति श्रद्धा नहीं रखता, वह गुरू के प्रति श्रद्धा नही रख सकता। हमारी श्रद्धा भी सीमित है, जिनके हम पक्षधर हैं, या जो हमारी प्रशंसा करता है, उसके प्रति श्रद्धा होती है। तो यह भ्रम है कि हमारे भीतर श्रद्धा है। जब तक टूटी फूटी योग्यता से अपनी तुच्छ योग्यतानुसार काम करने वालों की स्वयं निन्दा करके और दूसरों में फैलाकर समझते हैं कि हम गुरू के मिशन का भला कर

रहे हैं, तो हम भ्रम में जीते हैं।

हमारी कृतज्ञता भी केवल कुछ पक्षधरों के प्रति होती है और उनकी सेवा में भी अकसर अपनी स्वेच्छाचारिता का परिचय देते हैं, उनकी ज़बरदस्ती उनकी ऐसी सेवा करना चाहते हैं, जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं होती, तो हम भ्रम में रहते हैं कि हम तो सेवा कर रहे हैं।

माननीय श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी को जब माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बहुत ज़ोर देकर अपना दूध न पीकर उन्हें पिला दिया था, तो श्रीमान जी ने अगली सुबह फरमाया कि तुमने मुझे दूध पिलाकर अपनी स्वेच्छाचारिता को पूरा किया है, सेवा नहीं की, मुझे इस समय दूध की आवश्यकता नहीं थी, यह सुनकर माननीय श्रीमान जी जो नये नये समाज में आए थे हैरान रह गए क्योंकि वह सोच रहे थे कि दूध पिलाने के लिए मेरी प्रशंसा होगी, पर कैसे महान वह कर्मचारी थे जो सीधी बात बताते थे, श्रीमान जी M.A. पास थे और माननीय श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी अनपढ़ जैसे थे, परन्तु श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बुरा नहीं मनाया बल्कि जब तक श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी जिन्दा रहे उनकी झाड़ सुनकर भी उनसे लाभ उठाते रहे।

हम इस भ्रम में जीते हैं जब हम एक तरफा बात सुनकर उसी को सत्य मानकर किसी से घृणा करने लगते हैं। जबकि दूसरी पार्टी की बात जानने का यत्न भी नहीं करते, एक तरफा बात सुनकर ही न्यायधीश बन जाते हैं।

हम भ्रम में जीते हैं, जब किसी के पक्षधर बनकर उसकी किसी ग़ल्ती को भी ठीक साबित करने की कोशिश करते हैं, इससे उस जन की भी हानि करते हैं और अपनी भी हानि करते हैं।

हम भ्रम में जीते हैं, कि हम गुरू के प्रति बहुत श्रद्धा रखते हैं जबकि गुरू के जन्म दिन मनाने में सहायक होने के स्थान में हम दूसरों को भी उनका जन्म दिन मनाने में सहायक होने वा शामिल होने से रोकते हैं।

हम भ्रम में जीते हैं, जब हम अपनी अलोचना सुनकर React करते हैं और अलोचना करने वाले की ग़ल्तियां बताकर यह समझते हैं कि हमने उनका असली रूप दिखा दिया।

मुझे जहां तक याद है मैंने तीन बार ऐसी प्रतिक्रिया की है, जिसका मुझे बहुत दुःख होता है और हो रहा हैं। कई बार अपने दिल में तो क्षमा मांगी है और कई बार उनके उन पहलुओं के लिए सम्मान बनाए रखने का भी यत्न करती हूं। जिन पहलुओं में वह गुणधारी हैं। पर मैं यह महसूस करती हूं कि दूसरे अलोचना करते हैं, तो यह उनका काम हैं, हमें उल्ट पुल्ट नहीं होना चाहिए। कमज़ोरियां सब में हैं, परन्तु दूसरों को उनकी कमज़ोरिया बताने के स्थान पर अपने जीवन की ओर ध्यान जाना चाहिए। इसमें हम दुर्बल मनुष्य वहां तक ही सफल हो सकते हैं, जहाँ तक गुरू महाराज के प्रभाव किसी प्रकार थोड़ी सी मात्रा में भी मिल सकें। कई बार प्रतिक्रिया (React) करके हम दूसरे को दुश्मन बना लेते है। वह अपनी गल्ती तो समझें या न समझें परन्तु आप से स्वयं घृणा करने लगते हैं और दूसरों में घृणा फैलाने लगते हैं।

हम भारतियों को विशेष रूप से दूसरों की ज़िन्दगी में दख़ल अन्दाजी करने की बहुत बुरी आदत है। यदि कोई हमें बीमारी बता दे तो उसके ईलाज बताने शुरू कर देते हैं, कई बार उन चीज़ों

का रोगी पर बुरा प्रभाव पड़ता है, मेरा तो यह अनुभव है कि किसी के कहने पर कोई कोई चीज़ लेनी शुरू की तो उसके दुष्प्रभाव मुझे सहने पड़े। मैं जल्दी किए किसी के कहने पर ऐसा नहीं करती, फिर भी हम कमज़ोर हैं। किसी को भी दवाई वा खुराक के मामले में बिना पूछे सलाह देना दूसरों को हानि पहुँचा सकता है। दूसरों के घरों में दख़ल अन्दाजी वा बिना पूछे सलाह देने की आदत में हमारे भाव कौन से होते हैं, वह गुरू महाराज की रोशनी में ही नज़र आ सकते हैं। हम एक आध परिशोध करके अपने आपको बड़ा समझने लग जाते हैं, जबकि मनुष्य के सुख अनुराग उसे प्रतिदिन ग़ल्तियां करवाते हैं।

इस प्रकार हम मनुष्यात्मा तरह 2 के भ्रम में जीते हैं, अपने प्रति भ्रम के विषय में मैं सोचती हूं तो उससे कई पहलुओं में रक्षा होती है। हम दुर्बल मनुष्यात्मा हैं ही क्या? कितने नीच, घटिया, नीच सुख अनुरागी, हमें तो अपने आपको देखने से ही फुर्सत नहीं होनी चाहिए, यह फुर्सत कहां होनी चाहिए कि हम घण्टों दूसरों के ही जीवन की चर्चा करते रहें। काश! मैं अपने प्रति भ्रम में न रहूँ और हम सब इस विषय के विचार करें और अपने प्रति वा दूसरों के प्रति भ्रम में पड़कर जीवन बर्बाद न करें।

-सुरजीत बराड़

मेरा दुःख, मेरी सोच

मैं दुःखी हूं, मै दुःखी हूं, आपको क्या बताऊं कि मुझे क्या क्या दुःख हैं। मुझे दुःख है कि मुझे जितना कुछ मिलना चाहिए था वह नहीं मिला, मुझे शरीर अच्छा नहीं मिला, मैं इतना पढ़ा लिखा नहीं हूं, इसका मुझे दुःख है। दूसरे मेरे साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार नहीं करते, मैं चतुर होता तो मेरे पास बहुत सा धन होता, अच्छा घर होता, अच्छी गाड़ी होती, लोग भी मेरा सम्मान करते। मेरा तो भाग्य ही फूटा हुआ है। मुझे कभी सुख नहीं मिल सकता। मुझे आज तक माता-पिता से, भाई-बन्धुओं से कुछ नहीं मिला। साफ हवा वा पानी नहीं मिलता। मेरे दुखों के कई कारण हैं :- मेरा सम्मान नहीं है इसलिए मैं दुःखी हूँ, मेरी पूछ-ताश नहीं हुई, मेरी बातें नहीं मानी जाती इसलिए दुःखी हूं। मेरी तरफ किसी ने देखा ही नहीं इसलिए मैं दुःखी हूँ।

उनके बच्चे सैटल हैं, कामयाब हैं, हमारे नहीं हैं, उनका मकान या कोठी बड़ी है, हमारे पास वैसी नहीं है, इसलिए मैं दुःखी हूँ।

इस प्रकार की सोच पूर्णतः अहम और स्वार्थ, मोह, ईर्षा, नीच घृणा वा द्वेष से ओत-प्रोत है। इस प्रकार की सोच रखकर मैं अब भी दुःखी हूँ और आगे भी दुःखी रहूँगा।

दुनिया में दोनों प्रकार के सत्य हैं, एक नाकारात्मिक और दूसरा साकारात्मिक। अफसोस है कि मुझ पर नाकारात्मिक पक्ष ही हावी रहता है। यदि सुखी रहना है तो मुझे दुनिया, समाज और परिवार का साकारात्मिक पक्ष देखना होगा।

मुझे मेरे माता पिता ने जन्म दिया है, पाला है और मेरी योग्यता वा अपनी हैसीयत के

अनुसार शिक्षा दिलवाई। उनके इन उपकारों को याद करके मेरी सोच बदल सकती हैं।

मेरे अध्यापकों ने मुझे शिक्षित किया, उनके इस उपकार को याद करके उनके प्रति सम्मान वा कृतज्ञता का भाव बढ़ाकर मैं खुश रह सकता हूँ। यह भी सबके भाग्य में नहीं होता।

मुझे डाक्टरों, किसानों, इंजीनियरों का धन्यवादी होना होगा, यदि मैंने खुश रहना है।

मुझे समाज का धन्यवादी होना होगा कि जिसमें रहकर मैंने अच्छे संस्कार सीखे।

मैं दुखी कैसे रह सकता हूँ जिसके हाथ पैर और दूसरे अंग सही हालत में हैं।

मुझे आज तक सैंकड़ों व हज़ारों अपने उपकारी उच्च गुणधारी जन मिले हैं, जिन्होंने मुझे सम्भाला है और मेरी रक्षा की है, सबकी सहायता से ही मैं जिन्दा हूँ।

मेरी लिए धरती, सूरज, पशु, पौधे, हवा, जल उपलब्ध है जो बहुत कुछ फ्री में मुझे सेवाएं दे रहे हैं। उनके उपकार याद करके अपनी सोच को साकारात्मिक बना सकता हूँ।

इतने उपकारी, गुणधारी, मेरे रक्षक, पालनहार पाकर भी मैं क्यों दुःखी रहूं। मेरी सोच बदलने की आवश्यकता है। खुशी दुनियवी समानों की बढ़ौतरी में नहीं, बल्कि उपकार स्मरण, गुण चिन्तन करने में है। अपनी कमज़ोरियों को देखने में है।

मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य कि मुझे ऐसे गुरू मिले जो मुझे मेरी घटिया सोच को दिखाते हैं और श्रद्धा, कृतज्ञता, गुण चिन्तन करने में लगाते हैं, जो मुझे मेरी कमज़ोरियों को दिखाते हैं, उनके लिए पश्चाताप में लगाते हैं। मेरी रूह के रक्षक हैं। मुझे तो खुशी से झूम उठना चाहिए। काश! हम सब अपनी सोच को बदल सकें। हमें दूसरे कोई दुःखी नहीं कर सकते, हमारी सोच दुःखी रखती है। दूसरों के उपकारों को न देखकर, दूसरों के गुणों को न देखकर हमेशा अलोचनात्मिक रवैया रखकर, अपनी गल्तियों को छोटा और दूसरों की गल्तियों को बड़ा देखकर सदा दुःखी रहेंगे, इसलिए यह कहा है :-

"सकल पदार्थ हैं जग माहि, श्रद्धा, कृतज्ञता वहीन जन पावत नाहिं।"

अर्थात्

"जैसे मेरी दृष्टि, वैसी ही मेरे लिए पूरी सृष्टि"

-गोपाल कृष्ण

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59695

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

नीच अथवा बुरे चरित्र की बीस बड़ी-बड़ी बुराईयां

(नीच वा बुरे चरित्र की यह सब बुराईयाँ देव समाज और देव समाज के द्वारा अन्य जनों के जीवन से उनकी योग्यता के अनुसार नष्ट की जाती हैं।)

1. दूसरों के सम्बन्ध में शिष्टाचार का भाव न रखना।
2. किसी भी साधारण भलाई के काम को पसन्द न करना।
3. औरों के साथ अपनी उचित प्रतिज्ञाओं के पूरा करने का कोई भाव न रखना।
4. किसी साधारण शान्ति वा भलाई पर स्थापित किसी कानून वा प्रबन्ध के लिए सम्मान् का भाव न रखना।
5. आत्म-सम्मान विषयक सच्चे भाव का न होना।
6. आत्म-सहाय विषयक सच्चे भाव का न होना।
7. सरल प्रिय न होना।
   (समय-समय में क्या अपनी किसी बातचीत और क्या अपने लेख में कपटता अथवा टेढ़ी चाल का प्रकाश करना।)
8. दुष्टता के लिए प्यार।
   (किसी मनुष्य वा पशु को अकारण छेड़कर वा कष्ट पहुँचाकर वा किसी मनुष्य की किसी वस्तु वा मनुष्य के मान सम्मान आदि की जान-बूझकर हानि करके प्रसन्नता लाभ करना।)
9. निर्दयता के लिए प्यार।
   (अपनी खुशी वा अपने किसी लालच वा बदला लेने के लिए किसी मनुष्य या पशु को सताना वा वध करना।)
10. स्वेच्छाचारिता अथवा मनमुखी चाल का प्यार।
    (किसी अच्छे प्रबन्ध के नियम की पाबन्दी न कर सकना, और किसी जन की उचित आज्ञा जो जरूरी हो, उसे पालन न करना।)
11. आलस्य के लिए प्यार।
12. नीच संगत का प्यार।
13. मैले वा फूहड़पन का प्यार
    (अपने शरीर, अपने कपड़ों, अपने रहने के घर वा बैठने के स्थान और वस्तुओं को मैला कुचैला वा गन्दा रखना।)
14. गाली गलौच और गन्दी भाषा के व्यवहार का प्यार।
15. दयानतदारी को पसन्द न करना।
    (यहाँ तक कि रुपए पैसे को भी ठगी वा धोखे के द्वारा लाभ करना।) पैसे के मामले में किसी शक से भी अपने आपको ऊपर न रखना।
16. अपने नियत वा ज़िम्मे के काम के सम्बन्ध में कर्त्तव्य पालन का भाव न रखना।
17. अपने उपकारियों के लिए कृतज्ञता का भाव न रखना।
18. तरतीब वा परिपाटी के भाव से खाली होना।
    (अपनी वस्तुओं की परिपाटी वा तरतीब से और सम्भाल कर न रखना।)
19. स्वार्थी होना।
    (प्रत्येक सम्बन्ध में अपने ही सुख वा आराम वा लाभ को मुख्य रखना।)
20. अपने उपकारियों और बड़ों के सम्बन्ध में सच्चे सन्मान के भाव से खाली होना।
    (उनकी खिल्ली उड़ाकर वा निन्दा करके वा उनके सम्बन्ध में अपमानमूलक बातें करके तृप्ति वा प्रसन्नता लाभ करना।)

देव समाज एक पत्रकार की दृष्टि में

(एक पुराना पत्र)

एक पत्रकार गोरखपुर से लिखते हैं :- देश के पश्चिम उत्तर कोने पर स्थित कई प्रांतों में देव समाज नाम का एक संगठन कुछ लोग चला रहे हैं जो तर्क और विज्ञान की बात करते हैं, बजाए किसी देवी देवता पीर पैगंबर के। वह प्रकृति के नियमों पर विश्वास करते हैं। यह जानकारी मुझे आज से 22 वर्ष पहले हुई। हुआ यह कि एक लेखक और पत्रकार होने के नाते कुछ लेखन और चिंतन का काम जीवन का अंग बन चुका है। शायद यह सन 1980 का साल था जब सरिता में मेरा एक लेख "ईश्वर" शीर्षक से प्रकाशित हुआ जिसमें मैंने तर्क और तथ्यों के सहारे इस काल्पनिक अवधारणा को चकनाचूर कर दिया था। बहुतों को तो यह लेख बहुत पंसद आया पर कुछ उसे पढ़कर आगबबूला भी हो गए। बनारस से प्रकाशित दैनिक 'गांडीव' ने तो इस लेख के विरोध में एक संपादकीय ही लिख मारा। बाद में एक अन्य लेख लिखकर मैंने इन आलोचनाओं और आपत्तियों का उत्तर भी दिया। देव समाज से जुड़े एक व्यक्ति ने उस लेख की प्रशंसा में 'सरिता' के संपादक को पत्र तो लिखा ही साथ ही मेरा पता भी चाहा। संपादक ने वह पत्र मुझे रिपोस्ट कर दिया। इस क्रम में मैं..... जी से परिचित हुआ। उनकी प्रेरणा से मैं दिसंबर सन 1981 में भगवान देवात्मा के जन्म उत्सव समारोह में शामिल हुआ। 3 दिन तक इस कार्यक्रम में रहा, इसकी विस्तृत विवरण देना तो आपकी पत्रिका की काया (थोड़े पृष्ठ) देखकर अन्याय ही होगा, पर एक घटना का जिक्र तो करूंगा जिससे यह जायजा लिया जा सके कि वहां से मैं क्या लेकर लौटा। हुआ यह कि भगवान देवात्मा की छवि को पुष्पांजलि देनी थी जिसके लिए सभी जूते उतार रहे थे। मैंने एक दिन पूर्व ही नए जूते लिए थे, जिनकी सुरक्षा के लिए मैं चिंतित था क्योंकि मंदिर मस्जिद आदि में जूता चोरी एक आम बात है। मेरी परेशानी को वहां खड़े एक देव समाजी ने भांप लिया। उसने हंसते हुए कहा आप निश्चिंत होकर जाएं, यहां आप जूते तो क्या नोट की गड्डी भी फेंक कर चले जाएं, तो भी उसमें से एक भी कम ना होगा। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए जो ध र्म समाजों को अभी तक उठाईगीरों के अड्डे के रूप में देखता आया है, यह एक आश्चर्य की बात थी। मुझे यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि आज के समाज में जहां लोग पूर्वजों के जमाने से चली आ रही सड़ी-गली परंपराओं और मिथ्या धारणाओं के पीछे पगलाए घूम रहे हैं, कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी बुद्धि और विवेक से कुछ जानना चाहते हैं, कुछ करना चाहते हैं। सच्चा धर्म वही हो सकता है जो मानने वालों को बेहतर इंसान बना दे। बाकी सब ढकोंसला है, पखंड है।

लौटते समय ..... जी ने देव समाज के साहित्य का एक गट्ठड़ उपहार में दिया, इन्हें पढ़कर अब तक सैकड़ों लोग नहीं बल्कि हजारों लोग प्रभावित हो चुके हैं और अपने जीवन में कमोबेश सुधार ला चुके हैं। मानवीय मूल्यों को प्रकाशित करने वाली इस मिशाल की लौ लगातार बढ़ती रहे यही कामना है। (देव समाज के सेवकों के जीवन ईमानदारी की उदाहरण रहे हैं, काश! हम इस परंपरा को कायम रख सकें।)

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

उच्च व श्रेष्ठ चरित्र के सोलह बड़े–बड़े सद्गुण

(जिन्हे देव समाज अपने और अपने भिन्न और जनों में उनकी योग्यता के अनुसार विकसित करती है।)

1– औरों के सम्बन्ध में उचित रुप से सम्मान का भाव।

2 – सुश्रृंखला का भाव।

3 – सौन्दर्यप्रियता का भाव।
(जिस का प्रमाण अच्छी सफाई, शरीर के विविध अंगों वा किसी अन्य आकारों के विविध भागों के मेल, सजावट और शिल्प आदि के द्वारा मिलता है।)

4 – कान्स्टीटयूशन अर्थात् गठन और डिसिपलिन अर्थात् बाध्यता के सम्बन्ध में समादर और सम्मान का भाव।
डिसिपलिन अर्थात् बाध्यता के सम्बन्ध में समादर और सम्मान् भाव का प्रदर्शन करने से यह अभिप्राय है कि उपरोक्त प्रकार की प्रत्येक गवर्नमेंट वा सोसाइटी के सब नियमों और उसकी ओर से नियत किए हुए शासनकर्ताओं की सब आज्ञाओं को भलीभान्त पालन किया जाए, सिवाए इसके कि किसी ऐसे नियम या किसी ऐसी आज्ञा के पालन करने से किसी जन को किसी विषय में झूठ बोलना वा झूठ लिखना आवश्यक होता हो, वा इसके भिन्न कोई और ऐसा काम करना पड़ता हो कि जिसे वह अपने आत्मा के लिए हानिकारक समझता हो, तब ऐसी दशा में उसे किसी ऐसे नियम वा ऐसी आज्ञा के पालन करने से यदि उसके विचार के अनुसार उसे किसी प्रकार की कोई हानि पहुँचती हो, तो उसके ग्रहण करने के लिए उसे तैयार रहना चाहिए।)

5 – कर्त्तव्य पालन वा ज़िम्मेदारी का भाव।

6 – उच्च घृणा का भाव।
(जिस का प्रमाण किसी अन्याय – मूलक कानून वा नियम वा प्रथा वा कार्य के सम्बन्ध में नाराजगी वा घृणा के प्रकाश के द्वारा मिलता है।)

7 – उदारता का भाव।
(जिस का प्रमाण दूसरे जनों के सम्बन्ध में पक्षपात और क्षुद्रता से रहित और सद्भाव मूलक विविध बर्तावों से मिलता है।)

8 – सहानुभूति का भाव।

9 – वफ़ादारी अर्थात् किसी के सम्बन्ध में सच्चे रहने का भाव।

शेष पृष्ठ 11

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts